शोध प्रस्ताव

शोध प्रस्ताव का शीर्षक :–

बिहार में समावेशी विकास की नीति एवं सात निश्चय योजना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय , दरभंगा

सामाजिक विज्ञान संकाय

राजनीती विज्ञान विभाग

पी.ए.टी. सत्र 2021–2022

पर्यवेक्षक

डॉ. हुस्ने आरा

असिस्टेंट प्रोफेसर

डॉ. एल.के.वी.डी.कॉलेज, ताजपुर,समस्तीपुर

Dr. Husna Ara
Assistant Professor
Deptt. of Political Science
Dr. L.K.V.D College, Tajpur
Samastipur

शोधार्थी

Keshav Choudhary
15.04.2024

केशव कुमार चौधरी

पी.ए.टी. सत्र 2021–2022

रोल न. 22160129

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर (दरभंगा) के

सामाजिक विज्ञान संकयातर्गत राजनीति विज्ञान विषय में

पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रारूप

➢ शोध कार्य का शीर्षक (Title of the Research work):-

बिहार में समावेशी विकास की नीति एवं सात निश्चय योजना: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

परिचय(Introduction):

बिहार देश में ऐतिहासिक एवं राजनीतिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण राज्य है। बिहार बौद्ध धर्म एवं अपनी प्राचीन शिक्षा जैसे नालंदा विश्वविद्यालय एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय के लिए पूरे विश्व में जाना जाता था वहीं दूसरी ओर बिहार ने स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया तथा देश को प्रथम राष्ट्रपति दिया है। फिर भी बिहार बीमारू राज्यों की श्रेणी में आता है। बिहार गरीबी, जातिवाद, संसाधनों की कमी तथा अन्य समस्याओं से जूझ रहा है। बिहार की जनसंख्या भारत की कुल जनसंख्या का 8.60% है (2011)। बिहार सरकार द्वारा कराए गए जातिगत सर्वेक्षण के रिपोर्ट के मुताबिक कुल जनसंख्या 17 करोड़ 7 लाख 25310 है। बिहार का क्षेत्रफल भारत का 8.6% हिस्सा है कृ षि योग्य जमीन बिहार के पास केवल 3.8% ही है।

बाढ़ की समस्या बिहार में नेपाल से बाढ़ आती है। हर वर्ष कम या अधिक बाढ़ का आना बिहार में तय है जिससे मकान, फसल, मवेशी आदि की क्षति होती है। रोजगार के अवसर कृषि में शून्य हो जाती है। जिसके फलस्वरूप बिहार के लोगों की क्रयशक्ति निम्नतम स्तर पर पहुँच जाती है। जिससे 2400 कैलोरी प्रतिदिन प्रति व्यक्ति खरीदने की क्षमता लोगों में नहीं रहती है और गरीबी रेखा के नीचे बिहारवासी आ जाते हैं। जल

Huma Ara
15/04/24

Keshav Choudhary
15.04.2024

जमाव की समस्या बिहार में विशेषकर उत्तर बिहार में बहुत ही विकराल है। वैसे बिहार के कुल 28 जिला बाढ़ से प्रभावित है और 9 लाख हेक्टेयर भूमि जल जमाव की समस्या से प्रभावित है। एक अध्ययन के अनुसार देश के कुल बाढ़ प्रभावित क्षेत्र का 16 प्रतिशत हिस्सा बिहार में है। बिहार में औसतन बाढ़ से हुई क्षति भारत देश में बाढ़ से हुई कुल क्षति का 12 प्रतिशत है। भारत देश के बाढ़ प्रभावित कुल जनसंख्या का 2 प्रतिशत हिस्सा बिहार राज्य में निवास करती है।

शोध समस्या का प्राककथन (Statement of the Research Problem):-

बिहार में समावेशी विकास के लिए राज्य सरकार द्वारा सात निश्चय योजना बिहार राज्य को बेहतर बनाने के लिए राज्य सरकार द्वारा विकसित किया गया हैं और उन्हें सुशासन के कार्यक्रम 2015–2020 मे सम्मलित किया गया हैं। जिसे दिनांक 21 दिसम्बर, 2016 को लागू किया गया।

समावेशी विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सात निश्चय कार्यक्रम की सफलता अनिवार्य है अतः सात निश्चय कार्यक्रम के कार्यान्वयन और उपलब्धियां का परीक्षण प्रस्तुत शोध का मुख्य विषय है।

समावेशी विकास' की अवधारणा विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर बहस और चर्चाओं में महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है। सरकार ने समावेशी विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह माना कि उच्च राष्ट्रीय आय में वृद्धि अकेले रोजगार संवर्धन, गरीबी में कमी और संतुलित क्षेत्रीय विकास या मानव विकास में सुधार की चुनौती को संबोधित नहीं करती है। समावेशी विकास का विषय हाल ही में बहुत सारे कारणों से सुर्खियों में रहा है।

Husna Ara
15/04/24

Keshav Choudhary
15.04.2024

समावेशी विकास में चार विशेषताएं शामिल हैं – अवसर, क्षमता, पहुंच और सुरक्षा। अवसर लोगों को अधिक से अधिक अवसर पैदा करने पर केंद्रित है और उनकी आय बढ़ाने पर केंद्रित है। क्षमता उपलब्ध अवसरों का फायदा उठाने के लिए लोगों को अपनी क्षमताओं को बनाने या बढ़ाने के लिए साधन प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करती है। पहुंच अवसरों और क्षमताओं को लाने के लिए साधन प्रदान करने पर केंद्रित हैं। सुरक्षा लोगों को आजीविका के अस्थायी या स्थायी नुकसान से बचाने के लिए साधन प्रदान करती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि एक साथ समावेशी विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें जीडीपी में निरंतर विस्तार के साथ–साथ हास्य पर छुटे लोगों को भी विकास के लाभ प्रदान करना है।

पूर्व प्रधानमंत्री और महान अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह ने समावेशी विकास के प्रमुख घटकों पर जोर देते हुए कहा था कि ग्रामीण क्षेत्रों में निवेश में तेज वृद्धि, किसानों के लिए ग्रामीण बुनियादी ढांचे और कृषि क्षेत्र में तेजी, कृषि क्षेत्र में अद्वितीय सामाजिक सुरक्षा नेटवर्क के माध्यम से रोजगार और शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल पर सार्वजनिक खर्च में तेज वृद्धि अत्यावश्यक है। समावेशी विकास के विभिन्न अंतःसंबंधित तत्व निम्नानुसार गणना किए जा सकते हैं :

गरीबी में कमी

गुणवत्ता और रोजगार की मात्रा में वृद्धि।

कृषि क्षेत्र का विकास।

सामाजिक क्षेत्र का विकास।

अच्छी गुणवत्तापूर्ण सेवा वितरण प्रणाली।

मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) संकेतक और रैंकिंग में सुधार।

सामाजिक और क्षेत्रीय असमानताओं के प्रभाव को कम करना।

Huma Ara
15/04/24

Keshav Choudhary
15.04.2024

विकास के पैटर्न में, रोजगार संरचना में, प्रवासन और सामाजिक और आर्थिक व्यवहार के अन्य पहलुओं में, राजनीतिक परिवेश में और राज्य की भूमिका में कौन–कौने परिवर्तन हुए हैं? लाभों का वितरण वर्गों और जातियों के बीच, क्षेत्रों के बीच, पुरुष और महिलाओं के बीच, पीढ़ियों के बीच, धनी और गरीबों के बीच कैसे हुआ है? प्रगति को विभिन्न समूहों द्वारा कैसे समझा जा रहा है?

बिहार में समावेशी विकास की नीति की सफलता के लिए सुशासन के कार्यक्रम के अर्न्तगत संचालित सात निश्चय योजना की सफलता पर निर्भर करता है। इसलिए आवश्यकता है कि बिहार में सात निश्चय योजना का अध्ययन किया जाय?

- बिहार में समावेशी विकास की नीति कितना सफल है?
- बिहार के सतत विकास में युवा शक्ति की भूमिका क्या है?
- समावेशी विकास में महिलाओं की भूमिका क्या है?
- सात निश्चय योजना के समक्ष उत्पन्न चुनौतियं क्या–क्या है?
- बिहार में समावेशी विकास और सात निश्चय योजना के बीच क्या संबध है?

- **शोध का आच्छादन : सारतत्व एवं क्षेत्र (Research Coverage and Area):**

  - इस शोध का क्षेत्र बिहार में चलाए जा रहे सात निश्चय योजना है तथा अवधि 2015 से 2022 तक होगा। इस शोध में युवाओं को उच्च शिक्षा के लिए, युवाओं को रोजगार ढूंढने में मदद , आदि का अध्ययन करना है तथा इससे सम्बन्धित समस्याओं पर प्रकाश डालना है।
  - सरकार द्वारा महिला सशक्तीकरण की मुहिम को और आगे बढ़ाते बिहार के सामाजिक परिदृश्य को बदलने के सकारात्मक भूमिका का अध्ययन करना।

Husna Ara
15/04/24

Keshav Choudhary
15.04.2024

➢ मुख्यमंत्री विद्युत संबंधित निश्चय योजना के अंतर्गत राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों का सर्वेक्षण करना है।

➢ हर घर नल का जल सभी घरों में पाईप का जल पहुंचाने तथा लोगों की चापाकल और पेयजल के अन्य साधवों पर निर्भरता पेयजल समाप्त करने हेतु सुझाव देना व अध्ययन करना।

➢ प्रस्तावित शोध अध्ययन बिहार विकास मिशन के अंतर्गत सात उप मिशन यथा युवा उप–मिशन, कृषि उप–मिशन, उद्योग एवं व्यवसाय उप–मिशन, आधारभूत संरचना उप–मिशन एवं लोक संवाद एवं ब्रांड तथा सरकार द्वारा लिए गए सभी सात निश्चय, योजना को इस शोध के अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत सम्मलित किया गया है।

- **साहित्य का पुनरवलोकन (Review of Literature)**

➢ **डॉक्टर जगन्नाथ मिश्रा** ने अपनी पुस्तक **बिहार विकास और संघर्ष (2012)** में बिहार के विकास के समक्ष चुनौतियां एवं संभावनाओं पर प्रकाश डाला उन्होंने बिहार के प्रशासन के शिथिलता के कारण लक्ष्य प्राप्त होने में विफल रहती है साथ ही इस पुस्तक में कृषि भूमि सुधार बिहार की योजनाओं पर विशेष प्रकाश डाला है।

➢ **वरुण कुमार** संपादित पुस्तक **प्रयोग धर्मी विकास शिल्पी नीतीश कुमार (2023)** ने कहा गया है बिहार में सात निश्चय कार्यक्रम के माध्यम से बिहार के विकास की रूपरेखा गढ़ने की कोशिश हो रही है बिहार के विकास की विस्तृत रूपरेखा सात निश्चय कार्यक्रम है इसके माध्यम से शहरों और गांवों के बीच की दूरियों को कम करने का प्रयास किया जा रहा है इस पुस्तक में बिहार के विकास पर विस्तार से वर्णन किया गया है।

Keshav Choudhary
15.04.2024

- **प्रोफेसर कामेश्वर झा** द्वारा लिखित पुस्तक **नित नूतन बिहार उन्नायन नीतीश कुमार (2020)** में बिहार के विकास पर बल दिया गया है इसमें जल जीवन हरियाली अभियान को नीतीश सरकार का क्रांतिकारी योजना के रूप में चिन्हित किया है इसमें यह बताने का प्रयास किया गया है कि सात निश्चय योजना के छह कार्यक्रम ग्रामीण परिवेश के विकास और उत्थान को समर्पित है जो बिहार का विकास मॉडल है इस योजना से ग्रामीण परिवेश में गरीब और वंचितों की स्थिति में सुधार होगा

- **अमर्त्य सेन** ने अपने आलेख **बिहार भूत वर्तमान और भविष्य** में बिहार के गौरवशाली अतीत के बारे में वर्णन करते हुए कहा है कि बिहार हजारों साल पहले से भारतीय सभ्यता और संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र था। जिसमें शिक्षा की भूमिका अहम थी। लेकिन कालांतर में शिक्षा की स्थिति दयनीय होती गई और वर्तमान में शिक्षा की स्थिति और दयनीय हो गई है। बिहार अपने पुराने गौरव को वापस नहीं पा सका लेकिन अपने सामाजिक पिछड़ेपन और गरीबी को दूर करने में शिक्षा रूपी हथियार का प्रयोग कर सकता है।

- M. K. अपनी पुस्तक **आधुनिक बिहार का आर्थिक विकास: ऐतिहासिक सर्वेक्षण** (2010). यह पुस्तक महत्वपूर्ण रूप से बिहार के विकास का ऐतिहासिक सर्वेक्षण प्रस्तुत करती हैं। विकास के अवसर एवं चुनौतियों की व्याख्या करते हुए पुस्तक भविष्य के लिए एक विमर्श पर समाप्त होती हैं।
- Singh, N. K., Stern, N. अपनी पुस्तक **The New Bihar (2013)** विशेषज्ञ आर्थशास्त्री अमर्त्य सेन, कौशिक बसु, मोंटेक सिंह आहलुवालिया, मेघनाद देसाई, शंकर आचार्य, और अरविंद वर्मानी ने बिहार के विकास मॉडल को देखा और आगे के चुनौतियां पर चर्चा की। 1990 के दौरान, भारत की आर्थिक विकास में तेजी से हुई गति के बावजूद, बिहार का विकास उससे बहुत अधिक प्राथमिकता प्राप्त नहीं कर सका, मुख्य

Husna Ara
15/04/24

Keshav Choudhary
15.04.2024

रूप से पहले से ही कम शासन के मानकों में गंभीर कमी के कारण। यह परिस्थिति दृष्टव हुई थी नवंबर 2005 को, जब नीतीश कुमार सरकार को सत्ता मिली। शीघ्र समय में, शासन, आधारभूत सुधार, शिक्षा, विशेषकर प्राथमिक और बालिकाओं के लिए, स्वास्थ्य और कृषि में महत्वपूर्ण पहलुओं में महत्वपूर्ण पहलुओं की शुरुआत हुई। छह वर्षों में यह दिखाया गया है कि बिहार में तेजी से आर्थिक विकास संभव है। विकास के संवेग को बनाए रखने के लिए, शासन में हुए हाल के सुधारों को स्थापित और मजबूत किया जाना आवश्यक है।

- Singh, U. K.). अपनी पुस्तक **Human Development in Bihar, India: Experiences of Millennium Development Goals. (2022)** यह पुस्तक भारत के बिहार राज्य की आधुनिक स्थिति के मुद्दों को प्रस्तुत करती है, उसके प्रदर्शन के संदर्भ में सार्वजनिक विकास लक्ष्यों (MDGs) के सूचकांकों और केंद्रीय और राज्य सरकारों द्वारा मानव विकास को साकार करने की कदमों पर। इसके साथ ही, यह पिछले में की गई गलतियों पर आधारित है और स्थायी मानव विकास की दिशा में एक बेहतर भविष्य की दिशा में बढ़ती है। पुस्तक ने मानव विकास सूची के पृष्ठभूमि और सूचकांकों का व्यापक मूल्यांकन प्रस्तुत किया है, और इसने COVID-19 के प्रभाव का विश्लेषण किया है, सामान्यत : भारत पर और विशेषकर बिहार पर।
- S. K. अपनी पुस्तक **The Social, Political Processes and the Economic Development of Bihar (2009).** बिहार एक परिवर्तनशील राज्य है, और लोकतंत्र की लोकतंत्रीकरण के लिए एक पथ–प्रदर्शक। लोकतंत्रीकरण के सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रियाएं धीरे–धीरे बिहार को परिवर्तित कर रही हैं।
- Rodgers, G. अपनी पुस्तक **The Challenge of Inclusive Development in Rural Bihar (2013).** पुस्तक इस तथ्य की चर्चा करती हैं की बिहार के ग्रामीण क्षेत्र मे समावेशी विकास हेतु कौन सी परिस्थितियाँ मौजूद हैं । ग्रामीण बिहार की जनसंख्या ने पिछले 30 वर्षों में भारत के विकास में किस स्तर और कैसे भाग लिया है?

Huma Ara
15/04/24

Keshav Choudhary
15.04.2024

खासकर, आय, रोजगार और गरीबी कमी के मामले में क्या परिणाम हुआ है? कृषि संबंधों और कृषि उत्पाद में कैसे परिवर्तन हुआ है,

- Bhaumik ,Sankar Kumar अपनी पुस्तक **Development with Justice: The Bihar Experience (2024)** भारत के स्वतंत्रता के बाद, भारत की केंद्रीय और राज्य सरकारें ने कई विभिन्न विकास रणनीतियों का उपयोग किया है, जिनमें से कुछ समय के साथ विकसित हुई हैं। बिहार में हाल के दशकों में लागू की गई विकास मॉडल पहले की विकास रणनीतियों से अलग है। कई सामाजिक सुधार पहलुओं के साथ, बिहार सरकार ने जनसंख्या के सबसे संविदानशील समूहों के जीवन और जीवन परिस्थितियों को सुधारने और सामाजिक न्याय की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए न्याय–सह–विकास मॉडल को लागू किया।
- Datta, A. अपनी पुस्तक **Migration and Development in India: The Case of Bihar. (2022).** यह पुस्तक भारत में नीतिवादी आर्थिक विकास के संदर्भ में ग्रामीण–शहरी प्रवास से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विचार करती है। पहले, यह भारत में ग्रामीण–शहरी प्रवास पर राज्य के विचारों की पीछे की कहानी को प्रतिस्तापित करती है, 1930 के दशक से शुरू होकर इसके औद्योगिक, श्रम, ग्रामीण और शहरी कार्यक्रमों, और नीतियों का कृतिक विश्लेषण करती है।दूसरे, 1999, 2011 और 2016 में ग्रामीण बिहार में किए गए लॉन्गीट्यूडिनल सर्वेक्षणों के डेटा के माध्यम से, यह विभिन्न प्रवास के पैटर्न और आय के स्रोतों में परिवर्तनों की जांच करती हैय प्रवास के निर्धारकों और प्रभावों का अनुमान लगाती है।तीसरे, गाँव और शहर में की गई क्षेत्रगत कार्यवाही के आधार पर, यह समकालीन भारत में एक ग्रामीण–शहरी प्रवास धारा का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है। यह दिखाती है कि कैसे, जो की सांख्यिकीय जैसे जनगणना और एनएसएसओ के परिणामों के खिलाफ है, ग्रामीण बिहार में चलन की ऊँचाइयों में वृद्धि है, और यह समय के साथ बढ़ती हुई है, भारत के दूसरे शहरी बाजारों में बढ़ती हुई श्रम की मांग के परिणामस्वरूप। और इसके अलावा, यह भारत में कृषि को ग्रामीण से अलग करने के साक्षात्कार प्रदान करती है।

Huma Ara
15/04/24

Keshav Choudhary
15.04.2024

➢ Sinha, A. अपनी पुस्तक **Nitish Kumar and the Rise of Bihar.** (2011) नीतीश कुमार और बिहार का उत्थान एक स्पष्ट दृष्टिकोण से होने वाले भारतीय चुनावी राजनीति का अध्ययन है जो एक राजनीतिक नाटक की गति से खुलता है, जिसमें कड़े तथ्य और राज्य के अस्त–व्यस्त पथ के एक तीक्ष्ण विश्लेषण का प्रस्तुतीकरण है। सिन्हा सुगमता से वर्णन करते हैं जो बिहार के राजनीतिक समृद्धि के जटिल समूहों के माध्यम से नीतीश कुमार की क्षमता को प्रकट करने के लिए है, जो कानून व्यवस्था, सड़कें, शिक्षा और स्वास्थ्य को प्रशासन की मुख्यता में लाने में समर्थ हैं। सामंतीक राजनीति से जाति पहचानों तक, और अंत में विकास तक, बिहार भारत के स्वतंत्रता के बाद की यात्रा के लिए मॉडल साबित हो सकता है।

- **आलेख**

➢ Indrajit Roy **Development as Dignity: Dissensus, Equality and Contentious Politics in Bihar,** (2013) यह लेख विकास को एक प्रक्रिया के रूप में समझने के लिए एक विश्लेषणात्मक मुद्दे का केस प्रस्तुत करता है जो लोगों को उनकी गरिमा को पुनः प्राप्त करने और असमान सामाजिक संबंधों का प्रश्न करने की क्षमता प्रदान करता है। इसे विकास अध्ययन के भीतर चल रहे विवाद से प्रेरित किया गया है, जिसमें उन्हें विकास के एक दृष्टिकोण का प्रतिष्ठान्तरण करने वाले व्यक्तियों और उन लोगों के बीच एक तात्कालिक विचारहरू हैं, जो प्रक्रिया को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विभिन्नता को मिटा नहीं देने की विपरीत दृष्टिकोण को अपनाते हैं।

➢ Golam Rasul & Eklabya Sharma **Understanding the poor economic performance of Bihar and Uttar Pradesh,** (2014) यह लेख जाँचता है कि बिहार और उत्तर प्रदेश (यूपी), भारत, का अर्थशास्त्रिक विकास का कारण, यहां पर्याप्त से धनी प्राकृतिक संसाधनों से भी योग्य होने के बावजूद, क्योंकि दरअसल कुछ ऐसे कारण रहे हैं। पारंपरिक दृष्टिकोण के खिलाफ, विश्लेषण दिखाता है कि दरिद्र आर्थिक विकास किसी विशेष कारण के कारण नहीं है, बल्कि यह संरचनात्मक,

Husna Ara
15/04/24

Keshav choudhary
15.04.2024

ऐतिहासिक और मैक्रो–आर्थिक नीतियों में निहित कई सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों का परिणाम है।

• शोध का उदेश्य (Objectives of the Research)

- ➢ बिहार में समावेशी विकास की दशा एवं दिशा का अध्ययन करना ;
- ➢ सात निश्चय योजना के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों का पता लगाना ;
- ➢ वर्तमान परिवेश में राज्य के युवाओं को ई-गवर्नेस से जोड़ना है। ताकि वे राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर हो रहे घटनाक्रम, बदलाव एवं विकास पर समीक्षा करना है ;
- ➢ युवा पीढ़ी को आत्मनिर्भर बनाने एवं शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार के नये क्षेत्रों को तलाश;
- ➢ घर तक, पक्की गली– नालियां, निश्चय योजना के अन्तर्गत वैसे सभी कार्य जो नेटवर्क में छूटे हुए है ; को चिन्हित करके संपर्क विहीन टोलों बसावटों को उपग्रह मानचित्र की सहायता से चिन्हित करना तथा उनका स्थल सर्वेक्षण कर इससे सम्बन्धित सुझाव देना है।

• शोध परिकल्पना (Research Hypotheses)

- ➢ सात निश्चय योजना के कार्यान्वयन से बिहार में समावेशी विकास को बढ़ावा मिला है।
- ➢ युवा की **समस्याँ** का आर्थिक हल समावेशी विकास से हो सकता है।
- ➢ बिहार में समावेशी विकास के माध्यम से महिला सशक्तीकरण हो सका है।
- ➢ बिहार में समावेशी विकास और सात निश्चय योजना के क्रियान्वयन हेतु राजनीतिक स्थायित्व अनिवार्य है।

Husna Ara
15/04/24

Keshav Choudhary
15.04.2024

- **प्रस्तुत शोध कार्य का अनुशासन एवं अन्य अनुशासन के लिए योगदान**

  - बिहार में सात निश्चय योजना का प्रथम चरण पूर्ण हो गया है ऐसे में यदि इन योजनाओं के मूल्यांकन से जो निष्कर्ष निकलेगा वह आने वाले समय में सरकार को योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन में सहायता प्रदान करेगा।
  - सात निश्चय योजना के द्वितीय चरण के क्रियान्वयन में सहयोगी भूमिका का निर्वाहन होगा।
  - इस शोध के द्वारा बिहार में विकास की गति को बढ़ावा दिया जाएगा।
  - प्रस्तुत शोध अर्थशास्त्र, लैंगिक अध्ययन, समाजशास्त्र, के लिए भी उपयोगी होगा।

- **शोध पद्धत्ति (Research Method)**

  - इस प्रस्तावित शोध अनुसंधान में ऐतिहासिकं एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग कर बिहार के विकास को समग्र एंव वास्तविक रूप से जानने का प्रयास किया जाएगा जिसमें आवश्यकता अनुसार सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया जाएगा।
  - इस शोध के अंतर्गत आंकड़ों के संग्रह में प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया जाएगा।
  - इस शोध के अंतर्गत प्राथमिक स्रोत के रूप में सरकारी अभिलेखों, घोषणाओं, संसद एवं विधानमंडल में बहस, संस्मरण, आत्मकथाएं, संबंध व्यक्तियों के पत्राचार, राजनीतिक दलों की घोषणा पत्र, आदि से तथ्य संकलित किए जाएंगे।
  - इस शोध के अंतर्गत द्वितीयक स्रोत के रूप में आद्री द्वारा बिहार के विकास का सर्वेक्षण, प्रकाशित पुस्तके, शोध–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, संसदीय पत्रिका, विभिन्न प्रतिष्ठित बेबसाइटो, ई–पुस्तकालय इत्यादि का उपयोग किया जाएगा। इस विषय पर केंद्रीय पुस्तकालय ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग के पुस्तकालय एवं ए० एन० सिन्हा शोध संस्थान, पटना आदि में उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग किया जाएगा।

Khusna Ara
15/04/24

Keshav Choudhary
15.04.2024

विभाग के पुस्तकालय एवं ए० एन० सिन्हा शोध संस्थान, पटना आदि में उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग किया जाएगा।

- **कार्य प्रारूप अस्थायी कार्य योजना (Work Design: Tentative Plan of The Work):–**

प्रस्तावित शोध प्रबंध को वैज्ञानिक ढंग से सुगमतापूर्वक संपादित करने हेतु निम्नांकित अध्याय प्रस्तुत किया जाएगा।

अध्याय– प्रथम : परिचय

अध्याय– द्वितीय : समावेशी विकास के सैद्धांतिक आयाम का अध्ययन

अध्याय– तृतीय : बिहार में राजनीतिक नेतृत्व और समावेशी विकास

अध्याय– चतुर्थ : बिहार में सात निश्चय योजना का क्रियान्वयन और समावेशी विकास

अध्याय– पंचम : सात निश्चय योजना का बजटीय आवंटन एवं चुनौतियाँ

अध्याय– षष्टम : निष्कर्ष

ग्रंथ सूची

Husna Ara
15/04/24

Keshav choudhary
15.04.2024

संदर्भ सूची (Reference)

- मिश्र, डॉ जगन्नाथ, (2012) शबिहार विकास और संघर्ष, पटना, नोवेल्टी एंड कंपनी
- सिंह, ललित कुमार, (2018), डॉक्टर कलाम के सपनों का बिहार, नई दिल्ली, प्रतिभा प्रति
- कुमार, इंद्रसेन, (2019). बिहार अनटोल्ड ग्रोथ स्टोरी, नई दिल्ली एने बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
- झा, डॉ कामेश्वर (2020). नित नूतन बिहार उन्नायक नीतीश कुमार.
- सम्पादकः कुमार वरुण (2023). प्रयोग धर्मी विकास शिल्पी वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली
- झा पंकज (2010) सुशासन के आईने में नया बिहार प्रभात प्रकाशन
- सिंह अरुण (2015) नीतीश कुमार और उभरता बिहार प्रभात प्रकाशन
- डॉ. वंदना डांगी (2018) वैश्विक युग का भारत आर्थिक सुधार और समावेशी विकास का आधार प्रभात प्रकाशन
- डॉ. सरोज यादव डॉ. फतेह बहादुर सिंह डॉ. नीति (2023) महिला सशक्तिकरण एवं समावेशी विकास का भारतीय परिदृश्य चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ
- डॉ. रमाकांत शर्मा (2019) समावेशी विकास और नया भारत प्रकाशक यश पब्लिशर्स
- डॉ. जितेन्द्र कुमार (2017) समावेशी विद्यालय का सृजन प्रकाशक निर्मल पब्लिशिंग हाउस
- डा० तबस्सुम परवीन (2023) बिहार विकास की ओर EDUCATIONAL PUBLISHING HOUSE
- कुमार नरेंद्र सिंह (2009) बिहार में निजी सेनाओ का उद्भव और विकास प्रकाशन वाणी प्रकाशन
- विजय कुमार, युवराज देव प्रसाद (2012). बिहार के विकास में महिलाओं की भूमिका. प्रकाशन बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय
- कुमार पंकज विकास का नायक नीतीश कुमार. Diamond Pocket Books Pvt Ltd.

Keshav choudhary
15.04.2024

Husna Ara
15/04/24

- कुमार नरेन्द्र सिंह (2009). बिहार में निजी सेनाओं का उद्भव और विकास प्रकाशन वाणी प्रकाशन
- नीतीश कुमार (2021) विकसित बिहार की खोज प्रभात प्रकाशन
- Kumar, Varun (2023). Prayogdharmi Vikas-Shilpi : Nitish Kumar. (n.p.): Vani Prakashan.
- M. K. (2010). "आधुनिक बिहार का आर्थिक विकास: ऐतिहासिक सर्वेक्षण". India: नोवेल्टी एंड कंपनी.
- Singh, N. K., Stern, N. (2013). The New Bihar. India: HarperCollins Publishers India.
- Singh, U. K. (2022). Human Development in Bihar, India: Experiences of Millennium Development Goals. Singapore: Springer Nature Singapore.
- S. K. (2009). The Social, Political Processes and the Economic Development of Bihar. India: Manak Publications.
- Rodgers, G. (2013). The Challenge of Inclusive Development in Rural Bihar. India: Institute of Human Development.
- Bhaumik , Sankar Kumar (2024) Development with Justice: The Bihar Experience. United Kingdom: Taylor & Francis Limited.
- Datta, A. (2022). Migration and Development in India: The Case of Bihar. United Kingdom: Routledge.
- Sinha, A. (2011). Nitish Kumar and the Rise of Bihar. India: Viking.
- Zarhani, S. H. (2018). Governance and development in India: A comparative study on Andhra Pradesh and Bihar after liberalization. Routledge.

आलेख

- संजय कुमार. (2021). आत्मनिर्भर भारत के लिए आत्मनिर्भर बिहार. International Journal of Reviews and Research in Social Sciences, 9(1), 18-36.)
- Indrajit Roy (2013) Development as Dignity: Dissensus, Equality and Contentious Politics in Bihar, India, Oxford Development Studies, 41:4, 517-536, DOI: 10.1080/13600818.2013.835392

Hume Ara 15/04/24

Keshav choudhary 15.04.2024

- https://bihar.punjabkesari.in/bihar/news/saat-nishchay-yojana-changed-the-picture-of-every-village-1884753
- Golam Rasul & Eklabya Sharma (2014) Understanding the poor economic performance of Bihar and Uttar Pradesh, India: a macro-perspective, Regional Studies, Regional Science, 1:1, 221-239

पर्यवेक्षक	शोधार्थी
Johsne Ara 15/04/24	Keshav Choudhary 15.04.2024
डॉ. हुस्ने आरा	केशव कुमार चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर	पी.ए.टी. सत्र 2021—2022
डॉ. एल.के. वी.डी.कॉलेज, ताजपुर,समस्तीपुर	रोल न. 22160129

Dr. Husna Ara
Assistant Professor
Deptt. of Political Science
L.K.V.D.College, Tajpur
Samastipur

MBVerma 20.04.2024

20.4.24

20/4/24

20/4/24

20.04.24

Johsne Ara 15/04/24

Keshav choudhary 15.04.2024